श्री पण्डोखर सरकार

पण्डोखरसरकार धाम के दिव्य दरबार का आयोजन

स्थान–**बापूसभागार पटना**, **दिनांक**–8, 9, 10 अगस्त, 2023

आयोजकः श्रीशिवम् सिंह मो:**9995008671**

त्रिकालदर्शी पण्डोखर सरकार धाम के पीठाधीश पंडित गुरू शरण शर्मा जी के दिव्य दरबार का आयोजन दिनांक 8 अगस्त, 2023 से 10 अगस्त, 2023 तक तीन दिनों के लिए ज्ञानभवन, पटना के बापूसभागार में किया जा रहा है। पटना में इस दिव्य दरबार के आयोजन से बिहार के उनके लाखों भक्तों में खुशी की लहरदौड़ गयी है। आयोजकों द्वारा बताया गया है कि बापूसभागार में 5 हजार भक्तों के बैठने की समुचित व्यवस्था है। इसके लिए आयोजकों द्वारा भी पूरी तैयारी कर ली गयी है।

त्रिकालदर्शी दिव्य दरबार में समागम करने के लिए ww.pandokharsarkar.org पर तीन दिनों हेतु अलग–अलग (1) 8 अगस्त (2) 9 अगस्त एवं (3) 10 अगस्त की निःशुल्क बुकिंग करनी होगी। एक बुकिंग पर एक ही व्यक्ति की इंट्री मान्य होगी। बुकिंग करवाने वाले भक्तों को ही "पहले आओ पहले पाओ" के आधार पर दिव्य पण्डोखर सरकार दरबार में इंट्री दी जाएगी।

5 हजार भक्तों के आगमन के पश्चात् उक्त दिवस के लिए बापूसभागार, ज्ञानभवन में इंट्री बन्द कर दीजाएगी। इस तरह 8 अगस्त, 2023 से लेकर 10 अगस्त, 2023 तक लगभग 5 हजार भक्तगण प्रत्येक दिन दिव्य त्रिकालदर्शी पण्डोखर दरबार का प्रत्यक्ष अनुभव एवं आनंद प्राप्त कर पाएंगे।

चूँकि यह दरबार तीन दिनों तक चलेगा और कुल 15 हजार भक्तगण को दिव्य दरबार का प्रत्यक्ष आनंद प्राप्त होगा, इसलिए शेष भक्तगणों को भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकिवेइण्बवउध्च्दकवींतैंतांतकींउपरफेसबुकलाइव के माध्यम से दिव्य दरबार का आनन्द प्राप्त कर पाएंगे।दरबार प्रत्येक दिन लगभग 2.30 बजेदोपहर से आरंभ होगा।

आयोजकों द्वारा यह संभावना जताई गयी है कि प्रत्येक दिन दरबार में मात्र 5 हजार भक्तों के बैठने की व्यवस्था होने के कारण भक्तों द्वारा सुबह 10.00 बजे से ही गाँधी मैदान के समीप अवस्थित ज्ञानभवन के बापूसभागार में आगमन प्रारंभ हो जाएगा तथा दोपहर के लगभग 2.00 बजे तक भक्तों को अपना सीन ग्रहण कर लेना होगा। सीट भर जाने के पश्चात् भक्तों की इंट्री बंद कर दी जाएगी। अपार भीड़ की संभावनाओं को देखते हुए आयोजकों द्वारा प्रशासन से भी प्रशासनिक मदद की अपेक्षा जताई गई है।

दिव्य दरबार में आने वाले भक्तों में प्रतिदिन लगभग 200–300 भक्तों के लिए गुरूजी पण्डोखर सरकार द्वारा पर्ची निकालकर उनकी समस्याओं का निराकरण किया जा सकेगा तथा भूत–भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारेमें बताया जाएगा।

पटना में इस तरह के दिव्य दरबार के प्रथम बार आयोजन होने से भक्तगण काफी उत्साहित हैं तथा बिहार के हर जिले एवं कोने–कोने से उनके आगमन की संभावना है।

त्रिकालदर्शी दिव्य पण्डोखर सरकार की महिमा

श्री पण्डोखर सरकार

" एकंम् सद् विप्राबहुधा वदन्ति " अर्थात् सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग–अलग रूपों में व्यक्त करते हैं। ऋग्वेदमें वर्णित ये पंक्तियाँ हम भारतवासियों के जीवन की मूल पद्धति है, जिसके कारण हम भारतवासियों ने 'सर्वधर्म समभाव' और 'वसुधैव कुटुम्बकम' के भाव को अपनी जीवन शैली के रूप में उतार लिया है। यही वह नींव है जिसके कारण चाहे धर्म, भाषा, क्षेत्र कोई भी हो,भारत जैसी सामाजिक समरसता और सौहार्द्र का कोई अन्य उदाहरण पूरे विश्व में कहीं नहीं मिलता, लगता है मानो तरह–तरह के पुष्पों को एक जगह एकत्र कर एक ही माला में पिरो दिया गया हो। इसी सार्व भौम सत्य और समरसता के एक रूप का दर्शन पण्डोखर सरकार धाम में होता है।

देश विदेश से लाखो लोग पण्डोखर सरकार के दिव्य दर्शन हेतु मध्यप्रदेश के दतियाजिले के पण्डोखर ग्राम में पहुँचते हैं। भक्तों के दैहिक, दैविक एवं भौतिक हर प्रकार की समस्याओं का निराकरण यहाँ साक्षात् हनुमान जी/बालाजी की कृपा से होता है। लोगों का यह विश्वास है कि पंडित गुरूशरण शर्माजी, पण्डोखर सरकार को साक्षात् हनुमान जी से प्रेरणा प्राप्त होती है तथा भक्तों के जीवन में भूत–भविष्य में होने वाली घटनाओं, भक्तों के मन में उठने वाले प्रश्नों एवं समस्याओं के निराकरण को पूर्व से ही गुरूजी पण्डोखर सरकार द्वारा पर्ची में लिख दिया जाता है। दरबार में भक्त की पर्ची पहले ही गुरूजी द्वारा लिख दी जाती है। फिर भक्तों को "माईक" के द्वारा सभी के सामने अपनी समस्या बताने के लिए कहा जाता है तथा जब भक्त अपनी समस्या को बता देते हैं तो पूर्व से लिखी गयी पर्ची को सभी के सामने ही स्क्रीन पर दिखा दिया जाता है।

ऐसे चमत्कारों को देखकर भक्तगण अचंभित होते हैं तथा रोमांच से भर कर दिव्य दरबार का आनंद उठाते हैं।

गुरूजी पण्डोखर सरकार का कहना है कि दरबार का उद्देश्य उस ईश्वरीय सत्ता और अध्यात्मक की शक्ति से लोगों का साक्षात्कार करवाना है, ताकि सांसारिक समस्याओं से जूझ रहे मानव को राहत मिले और वह सद्मार्ग पर चलने को प्रेरित हो।

यह भी उल्लेखनीय है कि गुरूजी पण्डोखर सरकार की शक्तियों का परीक्षण कई अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय मीडिया के द्वारा किया गया, परन्तु आज भी यह सभी विद्वानों के लिए शोध का विषय है कि आखिर गुरूजी पण्डोखर सरकार किस प्रकार से लोगों के मन की बात जान लेते हैं, वे किस प्रकार से लोगों की समस्याओं को जान कर उसका समाधान पर्ची पर लिख देते हैं। इसके हजारों उदाहरण यू–ट्यूब चैनल और अन्य सोशल मीडिया पर बिखरे पड़े हैं।

गुरूजी पण्डोखर सरकार का कहना है कि वैज्ञानिक एवं विद्वत् जन इस विषय पर शोध करें। बड़े–बड़े वैज्ञानिक चमत्कारों में विश्वास न करने वाले लोग, ईश्वरीय सत्ता को न मानने वाले लोग भी पण्डोखर सरकार दरबार में भाग लेकर परीक्षण करने के लिए स्वतंत्र हैं। उनका कहना है कि पण्डोखर सरकार बालाजी हनुमानजी की कृपा से ही गुरूजी के द्वारा पर्चियाँ लिखी जाती है एवं दरबार में बैठे किसी भी व्यक्ति चाहे वो परीक्षण के उद्देश्य से आएं हो अथवा उपनी समस्या लेकर आएं हों, दरबार से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गुरूजी पण्डोखर सरकार जन्म से ही दिव्य शक्तियों के स्वामी रहे हैं और 9 वर्ष की अल्पायु से ही दरबार चला रहे हैं। प्रबुद्धगण, नेताओं एवं अधिकारियों की भीड़ उनके दरबार में पहुँचती रही है। करोड़ों की संख्या में आमजन उनकी कृपा से लाभान्वित हुए हैं। भूत एवं भविष्य बताने की शक्ति तथा समस्याओं के निराकरण की विधि बताने की शक्ति उन्हें बचपन से प्राप्त है। गुरूजी परम पूज्य सद्गुरू देव श्री हाथीवानजी महाराज आज से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व अपने चार भाइयों के साथ बरहा क्षेत्र के राजा थे। यह कहा जाता है कि सी भी युद्ध आदि के दौरान श्रीहनुमानजी महाराज साक्षात् उनके हाथी पर विराजते थे। ईश्वर भक्ति की पराकाष्ठा के कारण पाँचों भाई समाधिस्थ हो गए थे। भिंड जिला के लहार स्थित बरहा गाँव में परमपूज्य श्री हाथीवानजी महाराज की समाधि पर आज भी आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए भक्तों का ताँता लगा रहता है।

पण्डोखर का पौराणिकमहत्व

कहा जाता है कि पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान अपना कुछ समय पण्डोखर गाँव में व्यतीत किया था और भगवान श्रीकृष्ण की प्रेरणा से यहाँ श्री हनुमंतलला की प्रतिमा स्थापित की गयी थी और पाण्डवो के ही नाम पर इस ग्राम का नाम पण्डोखर और श्री हनुमंतलला का नाम पण्डोखर सरकार पड़ा। यह भी मान्यता है कि यह ग्राम जिस नदी पर बसा है अर्थात् पुष्पावती गंगानदी, उसका भी अत्यंत पौराणिक महत्व है। कहते हैं कि इस नदी में स्नान करने और विधि–विधान से पूजन करने वाले भक्तों की समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती है। गुरूजी का दरबार अब तो भक्तों के लिए वर्ष के 365 दिन खुला रहता है और भक्त जन अपनी अर्जी पण्डोखर सरकार के समक्ष लगा सकते हैं।गुरूजी का कहना है कि वो भक्तों के भक्त श्री हनुमंतललाजी व परमपूज्य गुरूदेव श्री हाथीवानजी महाराज के आशीर्वाद के कारण ही यहाँ पहुँचने वाले भक्तों का दुख दूर कर पाते हैं।

यह कोई अंध विश्वास की जगह नहीं है, बल्कि विज्ञान के युग में विज्ञान को अध्यात्मक की चुनौती है। जहाँ विज्ञान समाप्त होता है वहाँ से अध्यात्मक की शुरूआत होती है। अपनी खुली आँखों से ईश्वरीय शक्ति को देखकर भक्तों का अध्यात्मक में और उस परम सत्ता में विश्वास बढ़ता है और यही कारण है कि दिन–प्रतिदिन पण्डोखर धाम आनेवाले भक्तों की संख्या में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो रहीहै।

बिहार के भक्तों के लिए यह सुअवसर है जब वे त्रिकालदर्शी दिव्य दरबार में स्वयं उपस्थित हो कर अथवा मीडिया के माध्यम से सीधे प्रसारित कार्यक्रम के माध्यम से ईश्वरीय सत्ता की शक्तियों के स्वयं साक्षी बनेंगे।